International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-5 October- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारत के युवाओं में नशीले पदार्थों के सेवन की घटनाएँ, कारण, परिणाम और प्रभाव

डॉ. अंजू तिवारी,

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड

सार

मादक द्रव्य व्यसन एक जीर्ण मानसिक रोग है। मादक द्रव्य व्यसन वह पदार्थ है जिसके सेवन से नशे का अनुभव होता है तथा लगातार सेवन करने से व्यक्ति उसका आदि बन जाता है। हमारे समाज में कई प्रकार के मादक द्रव्यों का प्रचलन है जैसे शराब, विहस्की, रम, बीयर, महुआ, हंडि या आदि सामाजिक मान्यता प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे अवैध पदार्थ भी काफी प्रचलित हैं जैसे भांग, गांजा, चरस, हेरोईन, ब्राउन सुगर तथा कोकीन आदि। डाक्टरों द्वारा नींद के लिए या चिन्ता या तनाव के लिए लिखी दवाईयों का उपयोग भी मादक द्रव्यों के रूप में होता है। तम्बाकूयुक्त पदार्थ जैसे सिगरेट, खैनी, जर्दा, गुटखा, बीड़ी आदि भी इनके अन्तर्गत आते हैं। मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या भारत में ही नहीं अपितु विश्व के विकसित तथा विकासशील देशों में भी एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। जिससें यह व्यसन देश के युवाओं में एक महामारी के रूप में फैलती जा रही है। इन नशीले पदार्थों के सेवन से विश्व में अपराध एवं हिंसा की प्रवृति दिन प्रतिदिन विकसित होती जा रही है। प्रत्येक वर्ष 26 जून को ड्रग एब्यूज एवं इलिसिट ट्रैफिकिगं के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है जिससे सम्पूर्ण विश्व को मुख्य रूप से युवाओं को ड्रग्स से खतरे के लिए जागरूक किया जा सके।

मुख्य शब्द *नशीले , पदार्थों सेवन परिणाम , प्रभाव*

परिचय

आज के समय में मादक पदार्थों का सेवन एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। युवाओं का एक बड़ा वर्ग इसकी चपेट में आ गया है। आज मादक पदार्थों के सेवन करके लोग अपना जीवन खराब कर रहें हैं। ये पदार्थ कुछ समय के लिए नशा देते है जिसमें व्यक्ति सुखद अनुभूति होती है, पर जैसे ही नशा खत्म होता है व्यक्ति फिर से उसे लेना चाहता है। कुछ ही दिनों में उसे इन पदार्थों की लत लग जाती है।

स्कूल, कॉलेजों में ड्रग्स, नशीली गोलियां चोरी छिपे बेची जा रही है जो युवाओं के भविष्य को नष्ट कर रही है। इन मादक पदार्थों का सेवन करने के बाद जल्द ही इसकी लत लग जाती है । उसके बाद लोग चाहकर भी इसे छोड़ नहीं पाते हैं। बच्चे अपनी पॉकेट मनी को खर्च करके इसे

लेने लग जाते हैं। जल्द ही यह सेवन करने वाले व्यक्ति को पूरी तरह से बर्बाद कर देती है। आज देश के कई राज्यों में इन मादक पदार्थों ड्रग्स को चोरी छिपे बेचा जा रहा है।

और अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ सेवन और तस्करी निरोध दिवस

सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 1987 में अंतर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ सेवन और तस्करी निरोध दिवस मनाया गया था। विश्व ड्रग्स रिपोर्ट वर्ष 2017 के अनुसार जो कि संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स और अपराध कार्यालय (यूएनओडी) ने जारी किया है, लगभग एक चौथाई बिलियन लोंगों ने वर्ष 2015 में कम से कम एक बार मादक पदार्थों का उपयोग किया है। इसमें से लगभग 29.5 मिलियन लोग या वैश्विक वयस्क आबादी का 0.6 प्रतिशत मादक द्रव्य व्यसन सहित मादक पदार्थों के उपयोग से होने वाले रोगों से पीड़ित थे।

भारत में प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को राष्ट्रीय मादक पदार्थ विरोधी दिवस मनाया जाता है जिसका उद्देश्य भारत को मादक पदार्थों से मुक्त और प्रतिभा को बनाये रखना है। मादक पदार्थों का सेवन करना हमारे समाज के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक है। यह प्रवृति व्यक्ति को ही नहीं बल्कि समाज को भी समान रूप से प्रभावित करती है तथा इससे तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता में कमी और करियर, परिवार, प्रियजनों, दोस्तों एवं नागरिक भावना की तुलना में मादक पदार्थों के सेवन को प्राथमिकता देती है। राष्ट्रीय कार्यक्रम मादक द्रव्य व्यसन दुरूप्रयोग की रोकथाम और तस्करी निरोध से संबन्धित स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) और सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय (एमएसजेई), भारत सरकार देश में शराब और मादक पदार्थों की मांग में कमी के लिए नीतियों और मादक द्रव्य मुक्ति कार्यक्रम (डीडीएपी) के साथ कार्यरत है।

मादक द्रव्य दुरूपयोग की रोकथाम से संबन्धित कई ई स्वास्थ्य बेब आधारित कार्यक्रम है, जैसा कि राष्ट्रीय मादक पदार्थ निर्भरता उपचार केन्द्र (एनडीढीटीसी), एम, दिल्ली ने ई मदद (alcoholwebindia.in/intervention) और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान ने तंबाकू समाप्ति के लिए शुरू किए गए एम–सेसेशन कार्यक्रम (nhp.gov.in/quit-tobacco) का संचालन किया। राजस्व विभाग, केन्द्र सरकार स्वापक औषधि और मनःप्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985 और स्वापक औषधि और मनःप्रभावी पदार्थ अधिनियम 1988 में अवैध आवागमन की रोकथाम की अनुपालन करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महिलाओं में मद्यपान की प्रवृति का अध्ययन
2. मादक पदार्थों का युवा वर्ग में प्रभाव का अध्ययन

भारत में मादक व्यसन की स्थिति

संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया में भारत हेरोईन का बड़ा उपभोक्ता देश है वर्ष 2001 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण में भारतीय पुरूषों में अफीम सेवन की उच्च दर 12 से 60 साल की उम्र तक के लोगों में 0.7 प्रतिशत प्रतिमा देखी गयी है रिपोर्ट के अनुसार 2008 में भारत ने 17 मीट्रिक टन हेरोईन खपत और वर्तमान में 60 से 70 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष अफीम की खपत होती है।

सर्वेक्षणों के अनुसार भारत में पंजाब को ड्रग्स की समस्या से सार्वधिक पीड़ित पाया गया है। भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अध्ययन में पंजाब के 10 जिलों बंठिडा, फिरोजपुर, जालंधर, कपूरथला, गरु दासपुर, होषियारपुर, पटियाला, संगरिया, मोगा और तरनतारन को शामिल किया गया है। पंजाब में ड्रग्स का सेवन करने वालों की संख्या 232856 है। 89 प्रतिशत नशा करने वाले शिक्षित और साक्षर हैं। पंजाब में सबसे अधिक गांवों (56प्रतिशत) में होता है।

मादक पदार्थों का युवा वर्ग में प्रभाव

पूरे विश्व में मादक पदार्थों के सेवन से सबसे ज्यादा किशोर वर्ग जूझ रहा है, हमारा देश भी इसके सेवन अछूता नहीं है। यह पूरे विश्व की गम्भीर समस्या है जिसका प्रभाव भारत जैसे आदर्श देश पर भी अत्यधिक मात्रा में पड़ा है। आज की युवा पीढ़ी मादक पदार्थों के सेवन से अपने लक्ष्य को भूल रही है और वह अपने जीवन को बर्बाद करके अपने माता–पिता को भी दुःख दे रही है। मादक पदार्थों के सेवन से किशोर माता–पिता की आशाओं के विपरीत निकलने से स्वयं को उपहास का पात्र तो बनाते ही है लेकिन परिवार को भी तनाव ग्रसित करते है। युवा वर्ग में मादक पदार्थों के सेवन के प्रति रूझान के अनेकों कारण हैं, जिन्हें दूर करने के लिए समाज के सभी समुदाय का कर्तव्य है कि इस बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए युवा वर्ग के इन मादक पदार्थों के प्रति रूझान को खत्म करके समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने में सम्पुर्ण मदद करने की कोशिश करें।

महिलाओं में मद्यपान की प्रवृति

भारत में महिलाओं पर किये गये सर्वेक्षण से पता चलता है कि करीब 40 प्रतिशत महिलाये भी नशीले पदार्थों का सेवन करती है 20 साल पहले जहाँ 300 लोगों में से 1 व्यक्ति शराब का सेवन करता था वहीं आज 20 में से 1 व्यक्ति शराब का आदि है। परन्तु महिलाओं में इस प्रवृति का आना समस्या की गंभीरता दर्शाता है पिछले दो दशक में महिलाओं में मद्यपान करने वाली महिलाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। उच्च तथा उच्च मध्यम वर्ग की महिलाओं में यह एक फैशन के रूप में आरम्भ हुआ है। महानगरों एवं बडे शहरों की कामकाजी महिलाओं के छात्रावासों में यह एक आम प्रवृत्ति होती जा रही है शराब मुक्ति केन्द्रों के आंकड़ो से ज्ञात हुआ की नशो के गिरफ्त से छुटकारा पाने हेतु प्रत्येक 10 व्यक्तियों में से 4 महिलायें हैं।

मादक द्रव्य का सेवन, जिसे नशीली दवा के सेवन के रूप में भी जाना जाता है, उस पदार्थ के उपयोग के एक दोषपूर्ण अनुकूलनीय पद्धति को सूचित करता है जिसे निर्भर नहीं माना जाता है। नशीली दवा का सेवन शब्द, निर्भरता को अलग नहीं करता है,ख्3, लेकिन अन्यथा गैर–चिकित्सा संदर्भों में इसका प्रयोग समान तरीके से किया जाता है। मस्तिष्क या व्यवहार को प्रभावित करने वाली कोई औषधि या एक गैर– चिकित्सीय या गैर–चिकित्सा प्रभाव के लिए कार्य–निष्पादन में वृद्धि करने वाली औषधि तक इन शब्दों के परिभाषाओं की एक विशाल श्रेणी है।

ये सभी परिभाषाएं विवादास्पद औषधि उपयोग के प्रति एक नकारात्मक निर्णय देते हैं (वैकल्पिक विचारों के लिए उत्तरदायी औषधि उपयोग नामक शब्द से तुलना करें. इस शब्द के साथ अक्सर संबंधित कुछ औषधियों में अल्कोहल, ऐम्फिटामाइन्स, बार्बिचुरेट्स, बेन्ज़ोडायजिपाइन्स, कोकीन, मिथैक्वैलोन्स, एवं ओपिऑयड्स शामिल हैं। इन औषधियों का उपयोग करने से स्थानीय न्याय अधिकार पर निर्भर करते हुए संभावित शारीरिक, सामाजिक, एवं मनोवैज्ञानिक क्षति के अलावा आपराधिक दंड दोनों हो सकता है। नशीली दवा के दुरुपयोग की अन्य परिभाषाएं चार मुख्य श्रेणियों में आती हैंरू जन स्वास्थ्य संबंधी परिभाषाएं, जन संचार और स्थानीय भाषा के उपयोग, चिकित्सा संबंधी परिभाषाएं और राजनैतिक तथा आपराधिक न्याय संबंधी परिभाषाएं.

दुनिया भर में, संयुक्त राष्ट्र संघ का अनुमान है कि हेरोइन, कोकीन और कृत्रिम औषधियों के के 50 लाख से अधिक नियमित उपयोगकर्ता हैं।

नशीले पदार्थों के सेवन की घटनाएँ, कारण

अनदेखी का परिणाम

आज देश में सबसे बड़ी चिंता की बात यह है की युवा पीढ़ी नशे के जाल में जकड़ती जा रही है। देश में नशीले पदार्थों के उत्पादन से लेकर तस्करी बढ़ रही है। कई युवा इस नशे के शिकार हो रहे है। इसके मुख्य दोषी माता–पिता हैं, जो अपने बच्चों के कुकृत्यों की अनदेखी करते हैं। बच्चों को पैसा देकर अच्छे कॉलेज, संस्थानों में भर्ती करवा देते हैं और अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री मान लेते है। बच्चा कहां जा रहा है, कैसे रह रहा है, इसका कुछ भी ध्यान नहीं रखते हैं। इससे बच्चे कुसंगति का शिकार हो जाते हैं और नशे की गिरफ्त में भी आ जाते हैं। परिवार और समाज स्तर पर इस बुराई को नष्ट करने के प्रयास होने चाहिए।

संस्कार की कमी

ज्यादातर धनाढ्य माता–पिता की संतानें संस्कार की कमी की चलते गलत कदम उठाती हैं। दूसरी तरफ कई गरीब परिवारों की संतानें भी शिक्षा की कमी के चलते देखा देखी गलत कार्यों में लिप्त हो जाती हैं ।

चेन मार्केटिंग बढ़ा रही समस्या

समाज में समाजकंटकों द्वारा नशीले पदार्थों की चेन मार्केटिंग बढ़ रही है। ये गिरोह पहले मित्र समूहों में मुफ्त ड्रग्स देते हैं । फिर आगे से आगे लत लगाकर एक शृंखला निर्माण करके इस शृंखला को सुनियोजित ढंग से विस्तारित करते हैं । इस पर स्थानीय संस्थाओं को प्रशासन के साथ मिलकर लगाम लगाने का प्रयास करना चाहिए।

नशा बना फैशन

देश का युवा वर्ग आज नशे की गिरफ्त में फंसता जा रहा है। बड़ी संख्या में युवाओं ने नशे को अपने दैनिक जीवन में शामिल कर लिया है, जिसके परिणाम बड़े घातक हैं। नशे की प्रवृत्ति बढने़ का मुख्य कारण संगत भी है।

एक नहीं कई कारण

युवाओं को आकर्षित कर चेन बनाने की कोशिश करना, लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने पर गहन हताशा, माता– पिता का ध्यान न देना, पार्टियां, सरकार में नशे पर प्रतिबंध लगाने की इच्छा शक्ति न होना जैसे कारण युवा वर्ग में नशे की लत को बढ़ा रहे हैं।

जरूरी है जागरूकता

वर्तमान में युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी, कुसंगति, फिल्मों एवं जागरूकता की कमी के कारण युवा नशे की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। इसका समाधान उचित सामाजिक–राजनीतिक जागरूकता एवं कानून बनाकर किया जा सकता है।

बॉलीवुड का प्रभाव

देश के युवाओं की बड़ी संख्या बॉलीवुड से प्रभावित है। बॉलीवुड में नशे का प्रचार प्रसार खुलकर किया जा रहा है। हर युवा हीरो की तरह दिखना चाहता है। इस कारण वह नशे की तरफ आकर्षित हो रहा है।

तनाव भी एक कारण

देश में गरीबी और बेरोजगारी बेतहाशा बढ़ी हुई है। इससे युवा तनाव में रहता है और नशा करने लग जाता है। बुरी संगति भी किशोरों और युवाओं में नशे की आदत बढ़ा रही है। संभ्रांत वर्ग के युवा अपनी शान बढ़ाने के लिए नशे का शौक बढ़ा रहे है। कुछ नशीली चीजों के व्यापारी भी इस दुर्व्यसन को धन के लालच में बढ़ा रहे हैं। सरकारी महकमे की सख्ती इस बुराई को कम कर सकती है।

युवा वर्ग को रचनात्मक कार्यों से जोड़ें

मादक पदार्थों के सेवन से मिलने वाला अहसास और क्षणिक आनंद युवा वर्ग को अपनी तरफ आकर्षित करता है। युवाओं को रचनात्मक कार्यों में अपनी ऊर्जा एवं समय देने की प्रेरणा नहीं मिल पा रही है, जिससे भटक कर युवा वर्ग नशे की गिरफ्त में आता जा रहा है।

जरूरी है संवाद

धनी परिवार के युवाओं को सुविधाएं एवं पैसा आसानी से उपलब्ध हो जाता है। ज्यादा समय परिवार से दूर रह कर व्यतीत होता है। यह उम्र का नाजुक दौर होता है। बहलाने–फुसलाने वाले मिल जाते हैं और कोई नियंत्रण नहीं होने से युवा गलत राह पकड़ लेते हैं। संवाद से इसे रोका जा सकता है।

परिणाम और प्रभाव

युवा शराब, सिगरेट, ड्रग्स सहित न जाने कितनी जहरीली चीजों का सेवन करते है। वह इन चीजों के इतने ज्याजा लती हो जाते है कि इसके बिना शायद ही वो रह पाते है। अत: हमेशा नशे से बचके रहना होगा। मादक द्रव्य दुरूपयोग सबसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है।

यह एचआईवी, हेपेटाइटिस, तपेदिक जैसे गंभीर रोगों का कारण है, इसके अलावा इसके आर्थिक हानि और असामाजिक व्यवहार जैसे कि चोरी, हिंसा और अपराध एवं सामाजिक कलंक तथा समाज का समग्र पतन कई रूपों में दुष्प्रभाव भी हैं।

नशा करने से शरीर को अंदर से नुकसान होता है। जिसस व्यक्ति में कमजोरी आने लगती है। ऐसे में वह थोड़ा–सा काम करने पर भी थक जाते है।

ड्रग्स का सेवन या ड्रग्स की लत एक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्या है जो न केवल पूरे विश्व के युवाओं को प्रभावित करती है बल्कि विभिन्न आयु के लोगों को भी प्रभावित करती है.।

यह व्यक्तियों और समाज को कई क्षेत्रों में नष्ट कर देती है. ऐसे ड्रग्स की लऊत के कारण भूख और वजन, कब्ज, चिंता का बढ़ना और चिड़चिड़ापन, नींद आना और कामकाज की हानि का गंभीर नुकसान होता है।

उपसंहार

नशीले पदार्थों का सेवन कुछ मिनटों के लिए आनन्द देता है पर इसके दुष्परिणाम होते है। यह व्यक्ति को धीरे–धीरे निगल जाता है और उसके जीवन को हर तरह से बर्बाद कर देता है। अतः स्पष्ट होता है कि समन्वयस्क आयु समूह का प्रभाव व्यक्तिगत स्तर पर आनन्द की अनुभूति और तनाव से मुक्ति मादक पदार्थ सेवन का प्रमुख कारण है। ये सूचनादाता मादक पदार्थ की लोकप्रियता की चरम स्थिति में पहुँचाने की कोशिश करते हैं। क्षेत्रीय अध्ययन से पता चलता है कि

शिक्षित युवा वर्ग रुपये की तंगी हालत में चोरी, राहजनी, गैरकानूनी कार्य में अपने को लिप्त कर लेते हैं जिससे नशे की लत को पूरा किया जा सके। अध्ययन में सम्मिलित 50 प्रतिशत सूचनादाता आनन्द की अनुभूति के लिए नशे का सेवन करते हैं जबकि अन्य सूचनादाताओं ने निराशा व कुण्ठा से मुक्ति, थकान से मुक्ति, और काम शक्ति में वृद्धि की अनुभूति को वरीयता प्रदान की है। परन्तु जैसे–जैसे मादक पदार्थ का आदती बन जाता है। उसकी काम शक्ति वैसे–वैसे कम होती जाती है। सभी सूचनादाता यह मानते हैं कि मादक पदार्थ के न मिलने पर शारीरिक पीड़ा अधिक होती है जिसके कारण शरीर में अकड़न, सुस्ती, एवं आलस्य उत्पन्न हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

[1] सिंह, एम०एन० (1999), 'ड्रग्स तथा आधुनिक समाज', विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं०–20।

[2] इब्राहिम, एच०ए० (2016), जर्नल ऑफ फार्मेसी एण्ड बायोलॉजिकल साइंसेस, वॉल्यूम–11(1), पृष्ठ सं० 16।

[3] चव्हाण, बी०एस० (2007), इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्री, वॉल्यूम–49(1), पृष्ठ सं० 44–48।

[4] फ्रेड, ब्यूवेस (1989), अमेरिकन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ, वॉल्यूम–79, पृष्ठ सं० 634–636।

[5] शर्मा, भुवन (2017), जर्नल ऑफ फेमिली मेडिसीन एण्ड प्राइमरी केयर, वॉल्यूम–6(3), पृष्ठ सं० 558–562।

[6] पचौरी, जे०पी० (1999), 'ड्रग एब्यूज एण्ड एल्कोहलिस्म इन इंडिया', एम०टी०सी० प्रिन्टर्स, बरेली।

[7] अहमद, एन० एवं अन्य (2009), प्रवरा मेडीकल रिव्यू, वॉल्यूम–4(4), पृष्ठ सं० 4–6। नेशनल सर्वे ऑन एक्सटेटं, पैटर्न एण्ड ट्रेन्डस् ऑफ ड्रग एब्यूज़ इन इंडिया, (2004)। शर्मा,

[8] पी० और त्यागी ए० (2016), अमेरिकन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमिनीटीस, आर्ट्स एण्ड सोशल साइंसेस, पृष्ठ सं० 119।

[9] जिलोहा, आर०सी० (2009), दिल्ली साइकेट्री जर्नल, वॉल्यूम–12(2), पृष्ठ सं० 168–169।

[10] चड्ढा, आर०के० (2002), तंबाकू इंड्यूस्ड डिसीसेस, वॉल्यूम–1(2), पृष्ठ सं० 1–2।

[11] फुकन, आर०एस० (2017), ड्रग की समस्याः पंजाब और दिल्ली मे सरकार का सर्वेक्षण, *(https://www.mapsofindia.com)*A यूथ इन इण्डिया, वे रिपोर्ट *http://articles.timesofindia.indiatimes.com//2011-02 29/india/31109898_1_afagan-heroin-opium&*